चंबा की 'ढोलरू' गायन शैली के संरक्षण में 'डोम' जाति का योगदान

मनु देवी
शोधार्थी, संगीत विभाग
हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमला
ईमेलः manuchowari@gmail.com

प्रो० आर०एस० शांडिल
पूर्व डीन एवं अध्यक्ष, संगीत विभाग
हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमला

Reference to this paper should be made as follows:

मनु देवी,
प्रो० आर०एस० शांडिल
चंबा की 'ढोलरू' गायन शैली के संरक्षण में 'डोम' जाति का योगदान

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 2,
Article No. 24 pp. 160-165

https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2022-vol-xiii-no2

सारांश

चंबा जनपद में 'डोम' नामक अनुसूचित जाति 'ढोलरू' गायन शैली के संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका प्रमाण हमें प्रतिवर्ष चौत्र महीने में ढोलक की थाप पर गाए जाने वाली ढोलरू गीतों की स्वर लहरियों से मिलता है। इसका श्रेय निश्चिय डोम जाति को जाता है क्योंकि इसी जाति के द्वारा यह गायन शैली चौत्र महीने की संक्रांति से लेकर अगले 8 दिनों तक घर–घर गाई जाती है। वर्तमान में इस गायन शैली के कलाकारों में भले ही कमी आई है किंतु इसकी लोकप्रियता आज भी कायम है।

मुख्य बिन्दु

'ढोलरू', 'डोम' जाति।

भूमिका

देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध हिमाचल प्रदेश 12 जिलों में विभक्त एक ऐसा राज्य है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए विश्व भर में जाना जाता है इस के उत्तर–पश्चिम में स्थित जिला चंबा प्राकृतिक सुंदरता के साथ सांस्कृतिक परंपरा की दृष्टि से भी संपन्न जिला माना जाता है संस्कृति किसी भी समाज के साहित्य ,कला, धर्म ,दर्शन तथा परंपराओं के समग्र रुप को कहा जाता है तथा किसी विशेष समुदाय के लोगों को उनके पूर्वजों द्वारा सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जो रीति रिवाज, व्यवहार, कलाएं, आदतें आदि प्राप्त होते हैं वे उस समुदाय की परंपरा कहलाती है। चंबा की पारंपरिक गायन शैलियों का इतिहास काफी प्राचीन रहा है यह गायन शैलियां त्योहारों, उत्सवों, मेलों, ऋतुओं, सामाजिक तथा धार्मिक आधार पर भिन्न–भिन्न वर्गों में विभक्त हैं। इन शैलियों में से नववर्श की प्रतीक एक गायन शैली 'ढोलरू' चंबा तथा कांगड़ा दोनों जिलों में प्रचलित है।

संबंधित शोध साहित्य

उपरोक्त विषय से संबंधित शोध कार्य पूर्व में नहीं हुआ है।

शोध प्रविधि

1. 'ढोलरू' गायन शैली को सुरक्षित रखने में 'डोम' जाति के योगदान का अध्ययन करना।
2. 'ढोलरू' के आरंभिक इतिहास का अध्ययन करना।
3. 'ढोलरू' गीतों की विषय वस्तु तथा 'ढोलरू' की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।

क्षेत्र– ढोलरू लोक गायक कलाकार (विशेष चंबा जिला)।

शोध विधि– इस शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण– शोध संबंधित सामग्री के लिए प्रश्नावली सहित साक्षात्कारों का प्रयोग किया गया है।

ढोलरू गायन शैली व इसके संरक्षण हेतु उक्त जाति का योगदान

ढोलरू एक प्रकार की निबध गायन शैली है जो हिंदू संस्कृति के अनुसार नववर्ष के आगमन अर्थात चैत्र महीने में गाई जाती है। चैत्र महीना मार्च के अंतिम सप्ताह तथा अप्रैल के प्रथम सप्ताह से आरंभ होता है। इसका गायन वादन 'डोम'जाति के लोगों के द्वारा किया जाता है। 'डोम' एक प्रकार की अनुसूचित जाति है जिसको 'डुम' ,'डुमणा' तथा 'महाशा' आदि नामों से भी जाना जाता है। यह जाति चंबा के निचले क्षेत्र भट्टियात् तथा कांगड़ा के होशियारपुर गुरदासपुर आदि क्षेत्रों में पाई जाती है। इस जाति का मुख्य व्यवसाय बांस की 'टोकरी' अथवा 'किलटे' तथा अन्य वस्तुएं बनाकर बेचना है।

अपने पारंपरिक व्यवसाय बांस के बर्तन बनाने के अतिरिक्त यह जाति चौत्र महीने में घर–घर जाकर ढोलरू गायन के माध्यम से देसी महीनों के नाम सुनाती है। चंबा में ऐसी

मान्यता है कि इस जाति के द्वारा महीनों के नाम सुनना शुभ माना जाता है। ढोलरू अधिकतर युगल गान में ही गाया जाता है। इसमें एक कलाकार ढोलक बजाते हुए गायन करता है तथा दूसरा कलाकार केवल गायन का ही कार्य करता है। गायक कलाकार पति–पत्नी, भाई– बहन, मां–बेटा तथा अन्य कोई भी हो सकते हैं। इसमें लिंग भेद नहीं पाया जाता तथा नृत्य निषेध रहता है। ढोलरू गायन शैली की विषय वस्तु धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा ऋतु विशेष रहती है।[1] इस गायन शैली का गायन डोम जाति के द्वारा होने के विशय में कई दंत कथाएं प्रचलित हैं। इनमें सर्वमान्य कथा इस प्रकार है।

भगवान शिव का विवाह माघ महीने में हुआ तथा भगवान राम का चैत्र महीने में। राम के विवाह में शिव जजौई थे, अतः उन्होंने वहां पर आमंत्रित लोगों से बधाई गीत गानेको कहा। किंतु वहां उपस्थित मात्र डोम जाति के लोगों ने ही बधाई गीत गाए इससे प्रसन्न होकर शिवजी ने इस जाति को 'ढोलरू' गाने का वरदान दिया और कहा कि उच्च जाति के लोगों के घर जाकर महीनों के नाम 'ढोलरू' गायन के माध्यम से सुनाओ तथा राम और शिव स्तुति गीत भी गाओ। यह तुम्हारे मुख से सुनना उनके लिए शुभ माना जाएगा। इसी गायन शैली के पारिश्रमिक स्वरूप इस जाति को रोटी अथवा आजीविका भी लगाई। तब से लेकर आज तक यह जाति चैत्र महीने में घर–घर जाकर 'ढोलरू' गायन करती है।

लोग इन्हें पारिश्रमिक स्वरूप रूपये तथा होली में इस्तेमाल हुए वस्त्र आदि भेंट करते हैं।[2] इस गायन शैली का सर्वप्रचलित एक गीत इस प्रकार से है–

पैहला ता नां लेना नाराण दा, जिन्नी दुनिया बसाई, पैहला तां...
दू जा ता ना लैणां माई– बाप दा जी, जम्मी दसेया संसारा, दुआ ता...
त्रीया ता ए नां लैणां विधि माता दा जी, जिन्ना जाए न ए लेखणु, त्रीया ता...
चौथा ता है ए ना लेणां गुरु आपने जी, जिन्ना विद्या वो पढाई, चौथा ता...
पंजमा ता ए ना लैणां पंजा पांडवां दा जी, जेडे सृष्टि दे बली जोधे, पंजमा ता...
छठवां तां ए ना लैणां धौंल़बैल दा जी, जिन्नी सृष्टि दा भार थमेया, चिठवां तां...
आया ता चैत्र महिनीया जी, इत्त कोई सुणै भागा वाला जी, आया ता...
ह्यूंद ता गेया घरे आपणे, आई रित सोए दी बहार जां, आया ए ता...[3]

भावार्थ

'ढोलरू' गीत गाने का आरंभ उपर्युक्त गीत से किया जाता है। गीत की पंक्तियों में कहा गया है हमें सर्वप्रथम सृष्टिकर्ता नारायण का ध्यान करते हुए उन्हें दंडवत करना चाहिए क्योंकि उन्होंने इस संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना की। इसके पश्चात हमें अपने माता–पिता को प्रणाम करना चाहिए क्योंकि उन्होंने हमें जन्म दिया और उन्हीं के कारण हम इस सुंदर संसार को देख पाए। तत्पश्चात हमें अपने गुरुजनों को प्रणाम करना चाहिए क्योंकि उन्होंने हमें पढाया लिखाया और

एक सभ्य इंसान बनाया। हमें सृष्टि के पांच पांडवों कोभी प्रणाम करना चाहिए क्योंकि वह वीर, परा्मी, बली योद्धा थे और अंत में धवल बैल को भी प्रणाम करना चाहिए जिसने इस पृथ्वी को अपने सींग पर उठाया है।

इसके बाद गीत में देसी महीनों के नाम सुनाए गए हैं तथा इन महीनों की विशेषताएं बताई गई हैं। गीत के अंत में चैत्र महीने में राम सीता के विवाह का वर्णन भी किया जाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार क्योंकि चैत्र महीने में राम सीता का विवाह हुआ था, इसीलिए इस महीने में अन्य कोई विवाह नहीं होता।"[4]

गीत की शेष पंक्तियां इसी धुन पर आधारित हैं। इस गीत में रूपक प्रकार की ताल बजाई जाती है।

उपरोक्त गाने की स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6	7
ग	प	धसा	स	सा	स	सा
पै	ल	ऽऽ	तं	ऽ	ऽ	ऽ
सारे	ग	गरे	सा	ऽ	ध	सा
नाऽ	ऽ	लैऽ	णा	ऽ	न	ऽ
सारे	ग	गरे	सा	ऽ	सा	ऽ
राऽ	ऽ	नऽ	छा	ऽ	ना	ऽ
सा	–	–	प	–	प	ध
ऽ	ऽ	ऽ	जि	नी	सा	री
सारे	ग	रे	सा	ऽ	ध	सा
दुऽ	नि	ऽऽ	या	ऽ	ब	ऽ
सारे	ग	रे	सा	सा	ध	ऽ
साऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–
पै	ला	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ

चंबा जिला को आज यदि सांस्कृतिक दृष्टि से धनी तथा एक समृद्ध संपन्न जिला की दृष्टि से देखा जाता है तो निस्संदेह इसका श्रेय उन कलाकारों को जाता है जिन्होंने अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखा है। वर्तमान में जब हमारे पास कई आधुनिक उपकरण जैसे मोबाईल,

इंटरनेट, कंप्यूटर टेलीविजन आदि उपलब्ध हैं फिर भी 'ढोलरू' गायन शैली की लोकप्रियता में किसी तरह की कोई कमी नहीं आई है। आज महंगाई के इस दौर यह जानते हुए कि इस गायन शैली के माध्यम से ढोलरू गायकों की आजीविका नहीं चल सकती, उन्होंने इस गायन शैली को गाना बजाना नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने स्तर पर इन गीतों को संरक्षित रखा है तथा युवा पीढी को भी सीखाने की कोशिश की है। हालांकि इस शैली का गायन करने वाले लोक कलाकारों में काफि कमी आई है।

लोक गायकों की संख्या में गिरावट के कारण

इसका मुख्य कारण ढोलरू गायकों को उचित प्रोत्साहन ना मिलना है। यह लोक कलाकार अपनी लोक संस्कृति को संजोकर रखने का भरसक प्रयास कर रहे हैं, किंतु बदले में इन्हें ना तो इतनी धन राशि मिलती है कि जिससे ये अपनी आजीविका चला सकें, ना किसी से किसी भी प्रकार का कोई प्रोत्साहन मिलता है। इन्हें राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे मेले, त्योहार अथवा संगीत संगोष्ठियों में गाने का अवसर प्रदान करवाया जाना चाहिए तथा इन्हें उचित धनराशि के साथ सम्मानित किया जाना चाहिए ताकि इन कलाकारों का मनोबल बढे।

'ढोलरू' गायकों में कमी आने का एक अन्य कारण युवा पीढी का इस गायन शैली को गाने के प्रति रुचि ना लेना भी है। बढती महंगाई के इस दौर में मात्र गायन शैली पर निर्भर होकर जीवकोपार्जन करना कदाचित् संभव नहीं है। इसीलिए आज की युवा पीढ़ी ढोलरू गायन के स्थान पर सरकारी नौकरी करना अथवा अन्य व्यवसाय अपनाना पसंद करती है। इसे इनकी मजबूरी या जरूरत कुछ भी कह सकते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि ढोलरू गायन शैली बहुत प्राचीन होने के साथ–साथ नवीनता को भी लिए हुए हैं इसके संरक्षण में वैसे तो चंबा के बहुत से लोक गायक अपनी भूमिका निभा रहे हैं लेकिन सरकार के अनदेखेपन के कारण कहीं ना कहीं यह शैली लुप्त होने की कगार पर है। अगर इस शैली को समय रहते संरक्षित नहीं किया गया तो आने वाली पीढ़ियां इस गायन शैली की मधुरता से वंचित रह जाएंगी।

सुझाव

यदि इस गायन शैली के कलाकारों को अच्छा मंच प्रदान करवाया जाए तो संभवतः युवा पीढ़ी भी नौकरी के साथ–साथ इस क्षेत्र में अपना बढ़–चढ़कर योगदान दे पाएगी। अपनी संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए ना केवल एक जाति का वरन संपूर्ण समाज का दायित्व बनता है। सरकार को चाहिए कि वह इस क्षेत्र में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाते हुए इन कलाकारों को उचित मंच प्रदान करवाए। हमें इसे संरक्षित रखने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, देवराज. हिमाचल प्रदेश भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिचय. जगत प्रकाशनः घुमारवीं बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश।
2. शर्मा, रूप. हिमाचल प्रदेश, अंधकार से प्रकाश की ओर, भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक रूपरेखा. करण प्रकाशनः मंडी, हिमाचल प्रदेश।

साक्षात्कार

1. मिचनु राम, गांव टाटरू, तहसील भट्टियात्, जिला चंबा (हिमाचल प्रदेश)।
2. सेवा देवी, गांव सुगाड़ी, तहसील सिहुंता, जिला चंबा (हिमाचल प्रदेश)।
3. चमारू राम, गांव कामला, तहसील सिहुंता, जिला चंबा (हिमाचल प्रदेश)।
4. विमला देवी, गांव कामला, तहसील सिहुंता, जिला चंबा।